Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2454-4655 VOLUME - 7 No. : 12, Jan. - 2022

International Journal of Social Science & Management Studies

Peer Reviewed & Refereed Journal

Indexing & Impact Factor 5.2

Social Science and Management Welfare Association Women Cell

6th International Multidisciplinary Research Conference On

Women Entrepreneur Development

Date : 22-23 January, 2022

Venue : Jabalpur (M.P.), INDIA

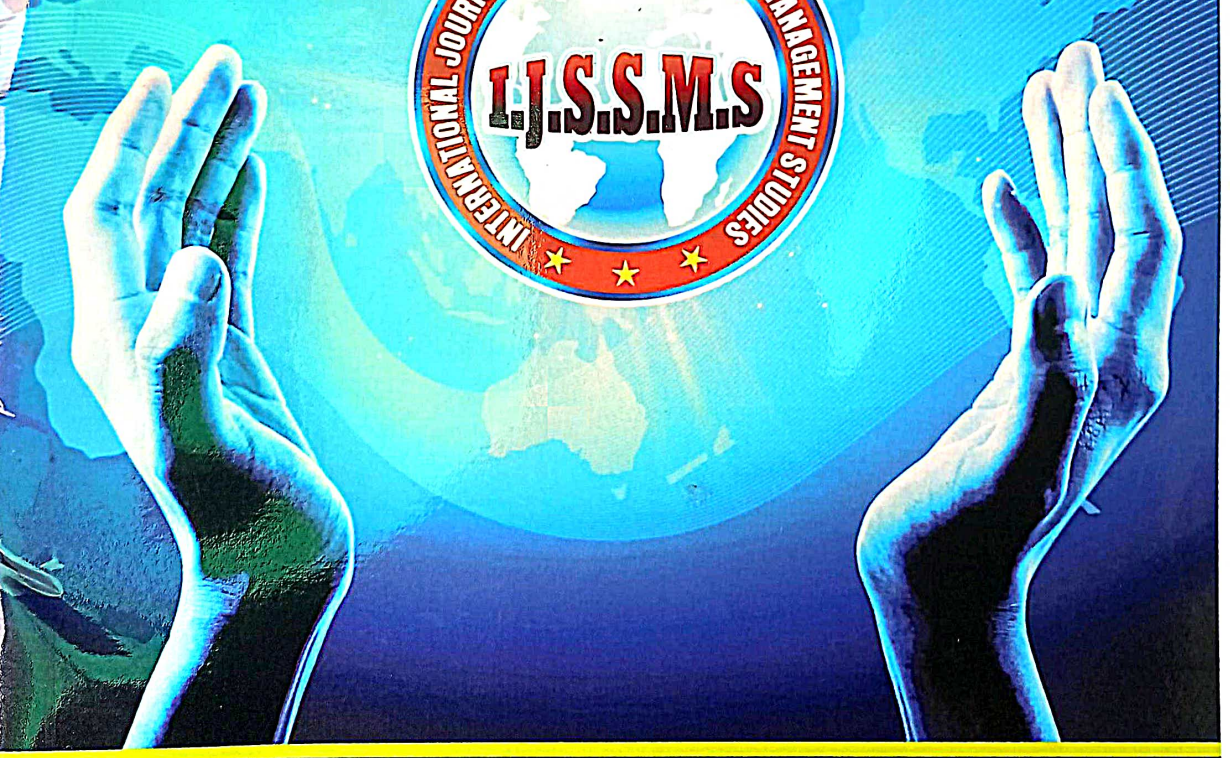

International Journal of Social Science & Management Studies

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	महिला सशक्तिकरण हेतु कार्यरत आशा बहुओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण	विजय कुमार शुक्ल	1-4
2	शिक्षा और नारी	श्रीमती करूणा गायकवाड	5-6
3	वैदिक काल में शिक्षित नारियां	डॉ. रीजा	7-9
4	पंचायती राजव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका	कविता कुमारी	10-14
5	वैदिक काल में नारी की स्थिति का ऐतिहासिक अध्ययन	श्रीमती कंचन चौरसिया	15-18
6	महिला सशक्तिकरण और घरेलू हिंसा से बचाव हेतु माध्यमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में जैन दर्शन एवं शांति शिक्षा की प्रासंगिकता	दीपक जैन	19-23
7	मेक इन इंडिया कार्यक्रम में महिला उद्यमी विकास	मथुरा प्रसाद साकेत	24-25
8	व्यापारी बंजारा महिला	डॉ. एच.के. वंदना	26-27
9	भारत में जनजातीय विकास एंव सांस्कृतिक परिर्वतन : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन	बेबी कुमारी	28-32
10	स्त्री आत्मनिर्भरता राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक	डॉ. सुप्रिया संजू	33-36
11	सक्षम नारी शक्ति और समाज	डॉ. श्रुति होरा	37-39
12	स्त्री विमर्ष में स्त्री लेखिकाओं का योगदान	डॉ. बी. आर. भद्री	40-43
13	आदिकाल से आधुनिक तक नारी की स्थिति	कांता देवी	44-47
15	महिला सशक्तिकरण	मूर्ति देवी	48-50
16	संस्कृत साहित्यकार महिलाएँ	डॉ. रीता एच. पारेख	51-53
17	भारत में महिला उद्यमिता–एक अध्ययन	डॉ. विजय ग्रेवाल नीलम कुशवाह	54-57
18	महिला सशक्तिकरण का मध्यप्रदेश के आयुर्वेद औषधि में उद्योगों का योगदान	निशा साकेत डॉ. कमर इजहार	58-61

International Journal of Social Science & Management Studies (I.J.S.S.M.S.)
Peer Reviewed-Refereed Research Journal, Indexing & Impact Factor - 5.2, Ex - UGC S.N. 5351
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 12, No. - 7, Jan - 2022, Conference Special Issues Hindi
2022

वैदिक काल में नारी की स्थिति का ऐतिहासिक अध्ययन

श्रीमती कंचन चौररिया
सहायक प्राध्यापक शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.) भारत

सारांश :– भारतीय सामाजिक व्यवस्था में नारियों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। किसी भी समाज एवं राष्ट्र की स्थिति को वहां की नारियों की दशा को देखकर आँका जा सकता है। पुरातन काल के गौरवमयी सतयुगी समाज का श्रेय नारियों की उच्च स्थिति को दिया जा सकता है। संस्कृति विकास के श्रेष्ठ काल वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति सुखद रही। वैचारिक, पारिवारिक, धार्मिक स्वतंत्रता के इस दौर में महिलाओं का सम्मान ओर प्रतिष्ठा पुरूषों के समकक्ष थी। वे अपना आत्मविकास और उत्थान कर सकती थीं उन्हें सुख–समृद्धि, शांति, वैभव और ज्ञान का प्रतीक माना जाता था। इसीलिए दुर्गा लक्ष्मी, सरस्वती के रूप में उनकी पूजा करने का विधान रहा है। मनुस्मृति के अनुसार, "यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूजयन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।" अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ इनकी पूजा नहीं होती वहाँ सभी कार्य निष्फल होते हैं। भारतीय धर्मशास्त्र में नारी सर्वशक्ति सम्पन्न मानी गयी। वैदिक काल में स्त्री बिना भेद–भाव के शिक्षा प्राप्त करती थी, पुत्र की भांति पुत्री का विद्यारंभ एवं उपनयन संस्कार किया जाता था। गृह की स्वामिनी के रूप में नारी को प्रतिष्ठित कर घर के अन्य सदस्यों को उसके शासन में रहने का निर्देश देने से लेकर पिता की सम्पत्ति पर भी पुत्र के समान अधिकार प्राप्त था। वैदिक ग्रंथों के अनुशीलन से स्पष्ट होता है कि तब समाज में स्वतंत्रता एवं समानता की भावना ओतप्रोत थी, नारियों को हर स्तर पर सम्मान एवं श्रृद्धा की दृष्टि से देखा जाता था।

मूल शब्द :– वैदिक काल, नारी, स्थिति, ऐतिहासिक, अध्ययन

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय समाज में नारियों का सम्मान और आदर प्राचीन काल में आदर्शात्मक और मर्यादायुक्त था। प्राचीन भारत में स्त्रियों की स्थिति पुरूषों के समान थी। वे अपना आत्मविकास और उत्थान कर सकती थीं। उन्हें पुरूषों क समान अवसर उपलब्ध थे एवं वे भी हर क्षेत्र में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेती थी। ग्रहकार्यो से होकर कृषि प्रशासन एवं यज्ञ कर्म से लेकर आध्यात्म साधना तक कोई भी क्षेत्र उनके विशिष्ट व्यक्तित्व प्रतिभा एवं कौशल की छाप से अछूते नहीं थे। अपनी बहुआयामी उपलब्धियों के आधार पर वे अपनी जाति के अंदर संजीवनी शक्ति का संचार करती थीं और अपने समाज व राष्ट्र को सशक्त एवं ऊँचा उठाने में अपना अमूल्य योगदान देती थीं। वैदिक काल में नारियों को उच्च ज्ञान ग्रहण करने की अनुमति थी। उस समय उच्चज्ञान को ब्रह्मज्ञान कहा जाता था। ज्ञान की देवी सरस्वती की शिक्षा की देवी की रूप में उपासना की जाती है। इससे यह संकेत मिलता है कि वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति शिक्षा के क्षेत्र में सशक्त थी। धार्मिक स्त्रोतो के अनुसार उस काल में नारियां धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लेती थीं। यज्ञ कार्यक्रमों में नारियां पुरूषों के साथ पूर्ण सहभागिता से सम्मिलित होती थीं वैदिक काल में परिवार का वरिष्ठ सदस्य स्त्रियों को शिक्षा दिया करता था। बालिकाओं के लिए बालकों की ही भांति शिक्षा ग्रहण करना आवश्यक थी। (अथर्व 11/05/14) बालिकाएँ ब्रह्मचर्य का पालन करती हुई विविध विधाओं में पारंगत होती थी। वैदिक काल में कुछ विदुषी महिलाओं का उल्लेख मिलता है जिन्होंने वेदों का अध्ययन करके कुछ ऋचाओं की रचना भी की जैसे सावित्री, यामी, अपाला, घोषा आदि बुद्धि और ज्ञान में अग्रणी थीं। पुत्र की भांति पुत्रियां भी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करती हुई विषयों का अध्ययन करती थीं। वैदिक काल में पुत्र के समान ही पुत्री की स्नेह–दुलार एवं आदर सम्मान दिया जाता था। (श. 3/31/2) परिवार में कन्याएं अपने आदर्श गुणों को विकसित करती हुई प्रायः माता के अनुशासन में रहती थीं। ग्रहकार्यों को सीखने के साथ उनकी सहायता भी करती थीं। (ऋ. 3/55/12) वैदिक कन्याएं कृषि कार्य में भी पिता के साथ सहयोग करती थीं। अपाला को अपने पिता के खेतों में अच्छी खेती के लिये इन्द्र से याचना करते हुए चित्रित किया गया है। ऋग्वेद में (ऋ. 8/81/5–3) कन्या को उच्च स्थान प्राप्त था, जिसका उदाहरण 'विसूनृता ददृशेयते घृतम्' (ऋ. 1/135/7) अर्थात् जहां घृत बहता है, वहां हर्ष से प्रफुल्लित कुमारी देखी जाती है। इस प्रकार कन्याओं का सामाजिक कार्यों में विशेष सहयोग था।

कौषीतकि ब्राह्मण में एक कुमारी गंधर्व गृहीत